UGC-CARE Journal

ISSN 0972-1002

श्रमण
ŚRAMAṆA

A Quarterly Refereed
Research Journal of Jainology

Vol. LXXIII, No. I
January-March, 2021

डॉ० सागरमल जैन विशेषांक

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi
Established : 1937

Scanned with OKEN Scanner

24. श्रमण नहीं पर श्रमण जैसे 81-83
डॉ. सुभाष कोठारी
25. सहज किन्तु असाधारण प्रतिभा सम्पन्न
डॉ. सागरमलजी जैन 84-86
डॉ. उमेश चन्द्र सिंह
26. सरस्वती माँ के वरदपुत्र 87-90
डॉ. प्रतिभा जैन
27. दर्शन एवं जैनागम के गूढ़वेत्ता थे प्रो. सागरमल जी 91-93
प्रो. अनेकान्त कुमार जैन
28. प्राच्यविद्या के उपासक प्रो. सागरमल जी 94-95
डॉ. सुमत कुमार जैन
29. अद्वितीय मनीषी : डॉ. सागरमल जी 96-97
डॉ. आनंद कुमार जैन
30. प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य
के विकास में योगदान 98-101
डॉ. आशीष कुमार जैन
31. डॉ. सागरमलजी को श्रद्धा–सुमन 102
श्री शांतिलाल कोठारी
32. Prof. Sagarmal Ji Jain 103-104
Sh. Ravinder Jain
33. खुजराहो की कला और जैनाचार्यों की
समन्वयात्मक एवं सहिष्णु दृष्टि 105-111
डॉ.सागरमल जैन
34. जैन विद्या के क्षेत्र में शोध एवं अध्ययन
का वर्तमान परिदृश्य 112-122
डॉ. सागरमल जैन
विद्यापीठ के प्रांगण में 123-125
जैन जगत् 126

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

1. **डॉ. सागरमलजी जैन को शत्–शत् वंदन** 1-2
   डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन
2. **डॉ. सागरमल जैन : जीवन वृत्त** 3-16
3. **Prof. Sagarmal Jain : His Life & Works** 17-23
4. **स्वयं में एक संस्था थे डॉ. सागरमल जैन** 24-25
   इन्द्रभूति बरड़
5. **प्रेरणापुरुष गुरुवर डॉ. सागरमल जैन : अब मात्र स्मृतियों में** 26-27
   डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय
6. **डॉ. सागरमल जैन : जीवन के कुछ अनछुये पल** 28-31
   डॉ. तृप्ति जैन
7. **स्मृतिशेष प्रो.सागरमल जैन : एक अप्रतिम व्यक्तित्त्व** 32-33
   प्रो. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी
8. **गृहस्थ साधक : प्रोफेसर सागरमल जैन** 34-37
   प्रो.कमलेश कुमार जैन
9. **विद्वत्मनीषी की साहित्य–साधना और जीवन का वैशिष्ट्य** 38-47
   प्रो. धर्मचन्द जैन
10. **दुर्लभ व्यक्तित्त्व के धनी : प्रो. सागरमल जी जैन** 48
    प्रो. सुदर्शन लाल जैन
11. **बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी : प्रो० सागरमल जी जैन** 49-50
    प्रो० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'
12. **जैन विद्या के साधक मनीषी : प्रो. सागरमल जैन अविस्मरणीय संस्मरण** 51-53
    प्रो. अशोक कुमार जैन

Scanned with OKEN Scanner

13. **प्रोफेसर सागरमल जैन : एक विलक्षण साहसिक व्यक्तित्व** 54-57
प्रो. प्रद्युम्नशाह सिंह

14. **प्रज्ञापुरुष डॉ. सागरमलजी जैन : विनम्र श्रद्धांजलि** 58-61
डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन

15. **मेरे गुरु : एक अप्रतिम व्यक्तित्व** 62-64
डॉ. अरुण प्रताप सिंह

16. **मेरे श्रद्धेय गुरुवर प्रो. सागरमल जैन** 65-66
डॉ. कमल जैन

17. **गुरु चरणारविन्द** 67-70
डॉ. जितेन्द्र बी. शाह

18. **प्रज्ञापुरुष प्रो.सागरमल जैन : एक संस्मरण** 71-72
प्रो. भिखारी राम यादव

19. **प्रो. सागरमल जैन – एक जीवन्त सारस्वत विद्वान्** 73
प्रो. दीनानाथ शर्मा

20. **जैन विद्या के अप्रतिम विद्वान् प्रो. सागरमल जैन** 74-75
डॉ. ओम प्रकाश सिंह

21. **असीम आस्था के केन्द्र प्रोफेसर सागरमलजी जैन को शत्-शत् नमन्** 76
डॉ. सुरेश सिसौदिया

22. **श्रद्धेय प्रो. सागरमल जैनः मेरे गुरु, मार्गदर्शक और संबल** 77-78
प्रो० रज्जन कुमार

23. **एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व : डॉ. सागरमल जैन** 79-80
डॉ. रमेश चन्द्र गुप्ता

Scanned with OKEN Scanner

24. **श्रमण नहीं पर श्रमण जैसे** 81-83
डॉ. सुभाष कोठारी
25. **सहज किन्तु असाधारण प्रतिभा सम्पन्न डॉ. सागरमलजी जैन** 84-86
डॉ. उमेश चन्द्र सिंह
26. **सरस्वती माँ के वरदपुत्र** 87-90
डॉ. प्रतिभा जैन
27. **दर्शन एवं जैनागम के गूढ़वेत्ता थे प्रो. सागरमल जी** 91-93
प्रो. अनेकान्त कुमार जैन
28. **प्राच्यविद्या के उपासक प्रो. सागरमल जी** 94-95
डॉ. सुमत कुमार जैन
29. **अद्वितीय मनीषी : डॉ. सागरमल जी** 96-97
डॉ. आनंद कुमार जैन
30. **प्रो. सागरमल जैन का जैन साहित्य के विकास में योगदान** 98-101
डॉ. आशीष कुमार जैन
31. **डॉ. सागरमलजी को श्रद्धा–सुमन** 102
श्री शांतिलाल कोठारी
32. **Prof. Sagarmal Ji Jain** 103-104
Sh. Ravinder Jain
33. **खुजराहो की कला और जैनाचार्यों की समन्वयात्मक एवं सहिष्णु दृष्टि** 105-111
डॉ.सागरमल जैन
34. **जैन विद्या के क्षेत्र में शोध एवं अध्ययन का वर्तमान परिदृश्य** 112-122
डॉ. सागरमल जैन
विद्यापीठ के प्रांगण में 123-125
जैन जगत् 126

Scanned with OKEN Scanner

प्राच्यविद्या के उपासक प्रो. सागरमल जी

- डॉ. सुमत कुमार जैन

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो. सागरमल जी (बाबूजी) समाज में प्राच्यविद्या के क्षेत्र में एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में विख्यात रहे। आपके द्वारा जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएँ दी गयीं। आपका जीवन प्राच्यविद्याओं के अध्ययन-अध्यापन को समर्पित रहा है। आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुमुखी रहा है। आपने साहित्य-सेवाओं के माध्यम से मात्र भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी प्राच्यविद्या का डंका बजाया।

आपकी अभिव्यक्ति-कला तो ऐसी थी कि जो व्यक्ति आपके व्याख्यानों को एक बार सुन लेता था, वह बार-बार सुनने की इच्छा करता था। मैं जब लाडनूं में अध्ययनरत था, उस समय आपके जैनविद्या एवं जैन साहित्य के ज्ञान का लाभ मुझे भी प्राप्त हुआ करता था। एक बार आप जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं आये थे, तब पहली बार आपके ज्ञान से परिचित होने का अवसर मिला था। आपका सैद्धान्तिक बातों को बताने का अपना एक अलग तरीका था, जिसके माध्यम से मुझे जैनदर्शन के सैद्धान्तिक पक्षों को जानने में प्रखरता प्राप्त हुई। आपके अध्ययन-अध्यापन का तरीका भी अनूठा था। आप चाहे कोई सैद्धान्तिक चर्चा करें या कोई व्यावहारिक चर्चा तर्कों के माध्यम से वह चर्चा दिमाग में चिरस्थायी जैसी हो जाती थी। आपकी हँसमुख छबि हमारे मानस-पटल पर निरन्तर विद्यमान रहती है और निरन्तर अध्ययनशील रहने की प्रेरणा प्रदान करती है।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी ने आपके निदेशकत्व में बहुयामी विकास किया, जो नींव के रूप में था, जिसका प्रवाह आज भी गतिमान है। आपमें कार्य करने की क्षमता अभूतपूर्व थी। आप नित्य ही प्राच्यविद्या की सेवा में लगे रहे। मैंने स्वयं देखा है कि आप लेखन कार्य में हमेशा ही लगे रहा करते थे।

प्रो. जैन (बाबूजी) का प्राकृत आगम, प्राकृत भाषा एवं साहित्य, जैनदर्शन आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान रहा। आपने अपनी लेखनी से अनेक पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन किया। आपके द्वारा प्राकृत-आगम, प्राकृत-साहित्य, संस्कृत साहित्य और दर्शन का तलस्पर्शी अध्ययन किया गया था, जो साहित्य के क्षेत्र में अविस्मरणीय रहेगा। आपकी पुस्तकों का अध्ययन करके शोधार्थियों में साहित्य पढ़ने की रुचि सहज ही जाग्रत हो जाती है और शोधदृष्टि तीव्र हो जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

प्राच्यविद्याओं की सेवाओं के अतुलनीय योगदान हेतु अनेक राष्ट्रीय-पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया गया। साथ ही प्राकृत के क्षेत्र में किये गये अवदान के लिए सन् २०१७ में महामहिम राष्ट्रपति-अवार्ड सर्वोच्च सम्मान से भी आप सम्मानित हुए। आपके साथ में मुझे भी महर्षि बादरायण (राष्ट्रपति) युवा पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो मेरे लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण और उत्साह को बढ़ाने वाला आपका साथ था।

मुझे ज्ञात है कि आपसे हम लोग, जब सामान्य लौकिक जीवन की चर्चा करते थे, तो आपके हँसीपूर्ण जबाब में भी ज्ञान की बात प्राप्त होती थी। हम जैसे युवाओं के लिए आपका आदर्श अनुकरणीय है। मैं आपको सविनय श्रद्धासुमन समर्पित करता हूँ और कामना करता हूँ कि यद्यपि आप हमारे बीच नहीं है, किन्तु आपके द्वारा की गयी साहित्य-साधना हम युवाओं को निरन्तर उत्साहित और ऊर्जा का संचार करती रहेगी।

***

Scanned with OKEN Scanner